अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2012) | दिनांक 24.12.2012

पांचवां वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ : निर्जरा, बंध और मोक्ष – 50

प्र.1 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 20

(क) निर्जरा और मोक्ष में क्या अंतर है?

(ख) द्रव्य व्युत्सर्ग तप के चार प्रकार कौन कौन से हैं?

(ग) ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से सम्यक्त्वी व मिथ्यात्वी के कितना श्रुत ज्ञान पैदा होता है?

(घ) मधु, मांस, मध और नवनीत को महाविकृतियाँ क्यों कहा जाता है?

(ङ) जीव किन–किन आत्म प्रदेशों द्वारा कर्म ग्रहण करता है?

(च) उर्ध्वलोक अधोलोक और समुद्र में एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

(छ) मनुष्यायुष्य कर्म बंध के कारण लिखें?

(ज) धर्मध्यान के चार प्रकार कौन–कौन से हैं?

(झ) सर्वकर्म रहित आत्मा के अभिवचनों में से परिनिवृत्त की परिभाषा लिखें।

(ञ) अंतराय कर्म के क्षयोपशम से समुच्चय रूप से क्या उत्पन्न होता है?

(ट) भिक्षाचरी तप के अन्तर्गत उक्षिप्त चर्या से आप क्या समझते हैं?

(ठ) अतीर्थ सिद्ध किसे कहते हैं?

(ढ) वैयावृत्य के दस प्रकार लिखें।

प्र.2 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें – 10

(क) सकाम, अकाम और सहज निर्जरा को समझाइये।

(ख) कर्मबंध के कारण जीव किस प्रकार परवश हो जाता है, व्याख्या कीजिये।

(ग) कर्मों के सम्पूर्णक्षय का क्रम आगम में किस प्रकार मिलता है?

(घ) बंध पुद्गल की पर्याय है, कैसे?

प्र.3 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें – 20

(क) जयाचार्य ने किस प्रकार आगम प्रमाण द्वारा सिद्ध किया है कि इहलोक–परलोक के अर्थ तपादि क्रिया करने में धर्म नहीं है।

(ख) आगमानुसार मोक्ष सुखों का वर्णन कीजिये।

(ग) प्रदेश बंध को छः अवतरणों के द्वारा विश्लेशित करें।

(घ) स्वामीजी के अनुसार तप का संवर और निर्जरा से क्या संबंध है?

अवबोध – तप धर्म से बंध व विविध तक – 30

प्र.4 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दीजिए – 20

(क) तपस्या कितने भाव कितनी आत्मा?

(ख) क्या छद्मस्थ अकषायी होता है?

(ग) पंचाग्नि तप करने वाले को तीव्र कष्टानुभूति होती है, फिर उसमें निर्जरा क्यों नहीं होती?

(घ) वीतराग कौन होता है?

(ङ) कर्म का उदय चल रहा है, किन्तु कर्म का बंध नहीं होता, ऐसा समय कभी आता है?

(च) अपवर्तना किसे कहते हैं?

(छ) चार भाव कहाँ होते हैं?

(ज) भावशून्य क्रिया कहाँ होती है?

(झ) क्या सभी कर्म प्रकृतियों का संक्रमण होता है?

(ञ) पांच भावों का कितने कर्मों से संबंध है?

(ट) कर्म रूपी, आत्मा अरूपी है। रूपी और अरूपी का सम्बन्ध कैसे संभव है?

(ठ) क्या ऐसी भी कोई कर्म प्रकृति है, जिसका बंध हुए बिना अनन्त काल बीत गया?

प्र.5 कोई दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखें – 10

(क) एक कर्म की वर्गणा अधिकतम कितने भव तक भोगी जा सकती है?

(ख) व्युत्सर्ग किसे कहते हैं? उसके प्रकार व प्र प्रकारों के नाम लिखें।

(ग) कषाय के सोलह उदाहरण कौन से हैं?

(घ) किसी भी परिस्थिति या कार्य की निष्पत्ति में क्या कर्म की ही भूमिका रहती है, तथा काल को कारण क्यों कहा गया है?

श्रावक संबोध – 20

प्र.6 कोई चार पद्य लिखें – 12

(क) 'रात्रि भोजन विरमण' वाला पद्य लिखें।

(ख) 'आनन्द शिवानन्दा.....' पद्य पूरा लिखें।

(ग) जयन्ती श्राविका की सती महिमा को दर्शाने वाला पद्य लिखें।

(घ) ''केशरी सा वीर केसर'' वाला पद्य लिखें।

(ङ) ''सन्त भीखण स्वयं.....'' पद्य लिखें।

(च) श्रावक को अंगुली निर्देशन का अधिकार है, वह पद्य लिखें।

प्र.7 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें – 8

(क) जैन विद्या के जिज्ञासु लोगों के लिए प्राथमिक रूप से कौन सी पांच पुस्तकों का निर्धारण किया गया है?

(ख) तेरापंथ के पांच घटक तत्व कौन–कौन से हैं?

(ग) जैन परम्परा में पंचाग प्रणति वन्दना की क्या विधि है? तथा इसका वैज्ञानिक महत्व लिखिये।

(घ) उपासना, उपसंपदा, योगासन और ध्रुवयोग से आप क्या समझते हैं?

(ङ) चरम–अचरम तथा शुक्लपक्षी–कृष्णपक्षी किसे कहते हैं?

(च) वस्तु बोध की चतुर्भंगी के चार भंग कौन–कौन से बनते हैं?